ISSN: 2456-043X

International Journal of Engineering Science and Generic Research (IJESAR)

Available Online at www.ijesar.in

Volume 11; Issue3; 2025; Page No. 1-13

महिलाओं का आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण

गुड़िया कुमारी[1*] एवं डॉ कविता सिंह[2]

[1]शोध छात्र, हिंदी विभाग, सनराइज यूनिवर्सिटी, अलवर, राजस्थान

[2] शोध पर्यवेक्षक, सनराइज यूनिवर्सिटी, अलवर, राजस्थान

अमूर्त

सामाजिक-आर्थिक विकास सामाजिक और आर्थिक विकास का एक संयोजन है। यह आर्थिक उत्थान के साथ-साथ किसी के सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव है। यह बेहतर शिक्षा, आय, कौशल विकास और रोजगार के माध्यम से लोगों की जीवनशैली में सुधार है।

कीवर्ड: स्थिति, सशक्तिकरण, राज्य, व्यक्तिगत, जाति ।

परिचय

भारत में, महिला सशक्तीकरण कई अलग-अलग चरों पर निर्भर है, जैसे भौगोलिक स्थिति (शहरी या ग्रामीण), शैक्षिक स्थिति (वर्ग) सामाजिक स्थिति (जाति) और आयु। महिला सशक्तीकरण के लिए कई क्षेत्रों में राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय (पंचायत) स्तर पर कई नीतियां मौजूद हैं, जिनमें स्वास्थ्य, शिक्षा, आर्थिक अवसर और राजनीतिक भागीदारी आदि शामिल हैं। हालाँकि ऐसा लगता है कि समुदाय स्तर पर नीतिगत प्रगति और वास्तविक अभ्यास के बीच महत्वपूर्ण (4) अंतर हैं। पिछले वर्षों में महिलाओं को पुरुषों के हाथों बहुत कुछ सहना पड़ा है। पिछली शताब्दियों में, महिलाओं को समाज के लगभग रहित सदस्य के रूप में माना जाता था। सभी अधिकार पुरुषों को दिए गए हैं यहाँ तक कि मतदान का मूल अधिकार भी पुरुषों को दिया गया है। जैसे-जैसे समय आगे बढ़ा, महिलाएं अस्तित्व में आईं और उन्हें अपनी शक्ति का एहसास हुआ। इसके बाद महिला सशक्तीकरण के लिए क्रांति का दौर शुरू हुआ।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ है समाज की सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं में समान भागीदार के रूप में भाग लेने की उनकी क्षमता। भले ही विश्व अर्थव्यवस्था वैश्विक अर्थव्यवस्था में विकसित हो गई है, लेकिन विकसित और विकासशील दोनों देशों में महिलाओं को पीढ़ियों से जीवन के सभी क्षेत्रों में दबाया गया है। महिला सशक्तिकरण कहना जितना आसान है, करना उतना आसान नहीं है। यह एक निश्चित संबंध में समाज के सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों में क्रांतिकारी बदलाव की मांग करता है। अमेरिका और पश्चिमी देशों में महिलाओं की शिक्षा और स्वास्थ्य तुलनात्मक रूप से विकासशील देशों की तुलना में बहुत अधिक है। फिर भी लैंगिक पूर्वाग्रह और मान्यताएँ दुनिया भर में महिला सशक्तिकरण के विकास में मुख्य बाधा के रूप में काम कर रही हैं। भारत में भी, महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करने वाले विभिन्न कानूनों के बावजूद, लैंगिक असमानताएँ दुनिया में सबसे अधिक हैं।

ISSN: 2456-043X
International Journal of Engineering Science and Generic Research (IJESAR)
Available Online at www.ijesar.in
Volume 11; Issue3; 2025; Page No. 1-13

महिला सशक्तिकरण की बात करें तो सरल शब्दों में कहें तो यह एक ऐसा माहौल तैयार करना है, जहां महिलाएं अपने व्यक्तिगत विकास के बारे में स्वतंत्र निर्णय ले सकें और साथ ही समाज में बराबरी का दर्जा पा सकें। महिलाएं चाहती हैं कि उनके साथ बराबरी का व्यवहार किया जाए, इतना कि अगर कोई महिला अपने क्षेत्र में शीर्ष पर पहुंचती है तो यह एक सामान्य घटना होनी चाहिए, जिस पर लिंग के प्रति लोगों की भौंहें तन जाती हैं। यह तभी संभव है जब महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए एक चैनलाइज्ड मार्ग हो।

साहित्य की समीक्षा

उतामी, वाह्यु और सुलेमान, आदि और विंडियासिह, रिली और सारी, लिलिक। (2024)। इस अध्ययन का उद्देश्य शोध विषयों की विशेषताओं और आंतरिक और बाह्य दोनों पहलुओं से उनकी भागीदारी का वर्णन करना है। आंतरिक पहलू प्राप्त लाभों पर आधारित है, वर्णनात्मक सांख्यिकीय विश्लेषण का उपयोग करके डेटा का विश्लेषण किया जाता है। परिणाम दर्शाते हैं: (1) शोध के अधिकांश विषय पुरुष (85%) हैं, जिनकी आयु 46-60 वर्ष (45%) है, जिनके पास हाई स्कूल शिक्षा (60%) है, जो 1,000,000 - 2,000,000 प्रति माह कमाते हैं (65%), और 3 वर्षों से अधिक समय से एलएफएफसी के सदस्य हैं। (2) सदस्यों द्वारा प्राप्त लाभों के आधार पर आंतरिक पहलू से भागीदारी, बहुत उच्च स्तर की सहमति दर्शाती है। (3) सहयोग की संस्कृति सहित बाहरी पहलू से भागीदारी भी बहुत उच्च स्तर की सहमति दर्शाती है।

यादव, हेमा और पालीवाल, मनीषा और छत्रधि, निशिता। (2022)।ग्रामीण उद्यमिता में ग्रामीण महिलाओं के लिए आर्थिक अवसरों का विस्तार करने की क्षमता है, साथ ही भारत में सामान्य विकास और गरीबी उन्मूलन में योगदान भी है। महिला उद्यमिता भारत में ग्रामीण विकास के लिए एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि सभी के पास वर्तमान प्रौद्योगिकी-संचालित वातावरण में सफल होने के लिए आवश्यक डिजिटल उपकरण और कौशल हों। नेताओं और महिला उद्यमियों के साथ फोकस समूह चर्चा से पता चलता है कि डिजिटल उद्यमिता के इस अनूठे रूप में ग्रामीण महिला उद्यमिता विकास का समर्थन करने और महिला सशक्तीकरण की दिशा में मार्ग प्रशस्त करने की अपार क्षमताएं हैं।

उरीबो, ब्रिजेट और ओरहेरो, अब्राहम (2023).अध्ययन ने नाइजीरिया के दक्षिण-दक्षिण भू-राजनीतिक क्षेत्र में ग्रामीण महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास के संबंध और प्रभाव को देखा। एक क्रॉस-सेक्शनल शोध डिजाइन का उपयोग किया गया था, और गैर-संभाव्यता नमूनाकरण तकनीक का उपयोग करके 750 लोगों के सर्वेक्षण के माध्यम से डेटा एकत्र किया गया था। वितरित किए गए 750 प्रश्नावलियों में से 476 को पुनः प्राप्त किया गया और उनका विश्लेषण किया गया। प्रतिशत, पियर्सन उत्पाद क्षण सहसंबंध और रैखिक प्रतिगमन विश्लेषण का उपयोग करके एकत्र किए गए डेटा का विश्लेषण करने के लिए सामाजिक विज्ञान के लिए सांख्यिकीय पैकेज (SPSS) संस्करण 23 का उपयोग किया गया था। इन निष्कर्षों के आधार पर, अध्ययन अन्य बातों के अलावा सुझाव देता है कि सरकार की सशक्तिकरण नीतियों को हमेशा आवश्यक उत्थान के लिए महिला

ISSN: 2456-043X
International Journal of Engineering Science and Generic Research (IJESAR)
Available Online at www.ijesar.in
Volume 11; Issue3; 2025; Page No. 1-13

लिंग को ध्यान में रखना चाहिए, क्योंकि इससे नाइजीरिया में उनकी स्थिति और ग्रामीण विकास में सुधार करने में मदद मिलेगी।

देवी, मंजू और वर्मा, गीता और गभ्रू, आरती और चौहान, आंचल। (2023)।स्वयं सहायता समूह महिलाओं का एक छोटा स्वैच्छिक समूह है जो महिलाओं के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। यही कारण है कि वर्ष 2001 को "महिला सशक्तिकरण का वर्ष" घोषित किया गया था। यह शोध पत्र विशेष रूप से स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के सामाजिक-आर्थिक विकास पर ध्यान केंद्रित करता है और उनके सामने आने वाली चुनौतियों को समझने की भी कोशिश करता है। स्वयं सहायता समूह के सदस्यों ने इस कार्यक्रम में शामिल होने के बाद सशक्त होने का अनुभव किया और अपने भीतर कुछ कौशल विकसित करके उच्च स्थिति हासिल की।

शर्मा, एलिज़ा और दास, शुभंकर। (2021)।वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर और मध्य भारत के 60 गांवों की 3000 महिलाओं से एकत्रित प्राथमिक आंकड़ों का उपयोग करके ग्रामीण भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए एक एकीकृत मॉडल विकसित करना है। खोजपूर्ण कारक विश्लेषण से महिला सशक्तिकरण के तीन मुख्य आयाम सामने आए, अर्थात् आर्थिक, सामाजिक और मानवीय तथा कानूनी सशक्तिकरण। इस प्रकार एक वैचारिक मॉडल तैयार किया गया है, जो उन प्रमुख क्षेत्रों पर प्रकाश डालता है जिन्हें विकसित किया जा सकता है। ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने, उन्हें सामाजिक स्वतंत्रता और सुविधाएँ प्रदान करने तथा महिला सशक्तिकरण सुनिश्चित करने के लिए एक सख्त और अनुकूल न्यायिक प्रणाली सुनिश्चित करने के लिए सुधारों की आवश्यकता है।

अनुसंधान क्रियाविधि

पश्चिमी मध्य प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से पहचाने गए गैर सरकारी संगठनों के 200 उत्तरदाताओं को प्रश्नावली वितरित की गई है। जिले में विभिन्न ब्लॉक शामिल हैं, लेकिन केवल 120 उत्तरदाताओं से ही प्रश्नावली प्राप्त हुई।

डेटा विश्लेषण के लिए प्रयुक्त सांख्यिकीय उपकरण

इस अध्ययन में विभिन्न चरणों में डेटा विश्लेषण के उद्देश्य से निम्नलिखित उपकरण और तकनीकें शामिल हैं:

- वर्णनात्मक आँकड़े
- विश्वसनीयता और वैधता परीक्षण
- सरल सारणीकरण (आवृत्ति विश्लेषण)

ISSN: 2456-043X
International Journal of Engineering Science and Generic Research (IJESAR)
Available Online at www.ijesar.in
Volume 11; Issue3; 2025; Page No. 1-13

- क्रॉस टेबुलतिओन
- परिकल्पना परीक्षण (टी-टेस्ट)
- एक नमूना Z-परीक्षण

डेटा विश्लेषण

जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल विश्लेषण

तालिका 1: उत्तरदाताओं का जनसांख्यिकीय विवरण

जनसांख्यिकी		आवृत्ति	प्रतिशत
लिंग	महिला	120	१००%
	कुल	120	१००%
आयु	10-20	26	21.66 %
	20-30	44	36.66 %
	30-40	30	25 %
	40 और उससे अधिक	20	16.66 %
	कुल	120	१००%
शैक्षिक योग्यता	निरक्षर	18	15 %
	प्राथमिक स्तर	52	43.33 %
	मध्य एवं उच्चतर स्तर	50	41.66 %
	कुल	120	१००%
वैवाहिक स्थिति	अकेला	46	38.33 %
	विवाहित	66	55 %
	तलाकशुदा	8	6.66 %
	कुल	120	100%
आश्रितों की संख्या	0-2	14	11.66 %
	2-4	60	50 %
	4 और अधिक	46	38.33.%
	कुल	120	100%

ISSN: 2456-043X
International Journal of Engineering Science and Generic Research (IJESAR)
Available Online at www.ijesar.in
Volume 11; Issue3; 2025; Page No. 1-13

भौगोलिक क्षेत्र	शहरी	16	13.33 %
	ग्रामीण गैर-स्वदेशी	56	46.66 %
	स्वदेशी	48	40 %
	कठिन पहुँच अनुभाग	शून्य	0 %
	कुल	120	100%

स्रोत: प्राथमिक डेटा

उत्तरदाताओं का जनसांख्यिकीय विवरण तालिका 1 में दिखाया गया है। जनसांख्यिकीय विशेषताओं में लिंग, आयु, शैक्षिक योग्यता, वैवाहिक स्थिति और आश्रितों की संख्या शामिल है।

अध्ययन के लिए सामाजिक-आर्थिक स्थिति और महिला सशक्तिकरण से जुड़े कारकों के वर्णनात्मक आंकड़े लिए गए।

(प्रतिक्रिया 5-बिंदु पैमाने पर दर्ज की गई (1= निश्चित रूप से नहीं, 2= संभवतः नहीं, 3= हो सकता है या न हो, 4= संभवतः हाँ और 5= निश्चित रूप से)

तालिका 2: प्रतिक्रियाओं के वर्णनात्मक आंकड़े

सवाल संख्या	अर्थ	तरीका	मानक विचलन	श्रेणी
प्रश्न 7	4.95	5.00	0.22	1.00
प्रश्न 8	4.77	5.00	0.53	2.00
प्रश्न 9	4.63	5.00	0.58	2.00
प्रश्न 10	4.22	5.00	0.76	2.00
प्रश्न 11	3.90	4.00	0.71	2.00
प्रश्न 12	4.33	4.00	0.57	2.00

ISSN: 2456-043X
International Journal of Engineering Science and Generic Research (IJESAR)
Available Online at www.ijesar.in
Volume 11; Issue3; 2025; Page No. 1-13

प्रश्न 13	4.82	5.00	0.47	2.00
प्रश्न 16	4.38	5.00	0.64	2.00
प्रश्न 17	4.20	4.00	0.58	2.00
प्रश्न 18	4.30	5.00	0.70	2.00
प्रश्न 19	4.18	4.00	0.70	2.00

स्रोत: प्राथमिक डेटा

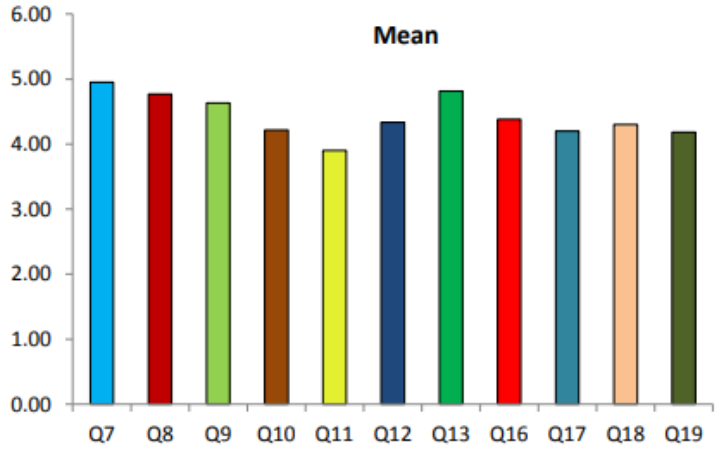

स्रोत: प्राथमिक डेटा

ग्राफ 1: सभी प्रश्नों के उत्तरों का औसत

ग्राफ 1 प्रश्नावली के प्रत्येक प्रश्न में दर्ज सभी उत्तरों का औसत प्रस्तुत कर रहा है; सभी उत्तर पक्षपाती हैं और संभवतः तथा निश्चित रूप से उत्तर देने की ओर अधिक झुकाव रखते हैं। सामाजिक-आर्थिक विकास तथा महिला सशक्तीकरण के लिए उठाए गए कदमों के प्रति गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) के इरादों, कार्यकलापों तथा प्रदर्शन के बारे में तस्वीर बहुत स्पष्ट है। प्रत्येक प्रश्न को नकारात्मक से सकारात्मक तक 5 के रेटिंग स्केल पर चिह्नित किया गया है तथा लगभग सभी उत्तरदाताओं ने प्रश्नों के सकारात्मक छोर पर चिह्नित किया है, जो एनजीओ के प्रति उनके सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है। चयनित उत्तरदाता इतने संतुष्ट हैं कि उन्होंने समाज तथा महिला

ISSN: 2456-043X
International Journal of Engineering Science and Generic Research (IJESAR)
Available Online at www.ijesar.in
Volume 11; Issue3; 2025; Page No. 1-13

सशक्तीकरण के लिए एनजीओ द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं के मामले में 4 या 5 अंक दिए हैं। इसलिए, समाज के उत्थान में एनजीओ की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि वे समाज के वंचित वर्गों से सीधे जुड़े हुए हैं। एनजीओ इस देश में परिवर्तन एजेंट के रूप में कार्य कर रहे हैं तथा राज्य, केंद्र सरकार को उनकी योजनाओं तथा कार्यक्रमों को जमीनी स्तर पर लागू करने में सहायता कर रहे हैं। एनजीओ स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) तथा कौशल विकास के माध्यम से महिलाओं की मदद कर रहे हैं। इससे महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ रहा है, जिससे उनका आत्म-विश्वास और आर्थिक मूल्य बढ़ रहा है।

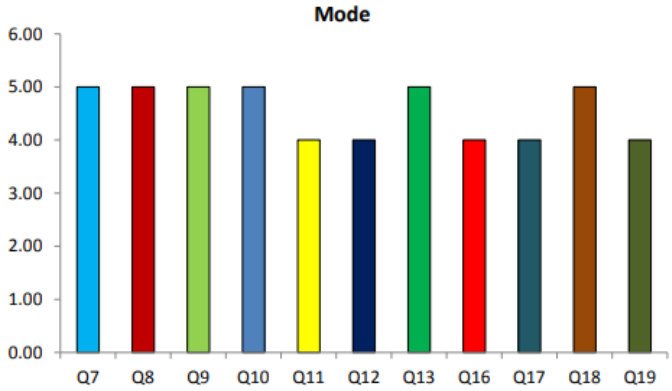

स्रोत: प्राथमिक डेटा

ग्राफ 2: सभी प्रश्नों के उत्तरों का तरीका

प्रत्येक प्रश्न के उत्तरों का स्वरूप ग्राफ 2 में प्रस्तुत किया गया है जो स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि या तो स्वरूप 4 है या 5। प्रत्येक प्रश्न को नकारात्मक छोर से सकारात्मक छोर तक 5 के रेटिंग स्केल पर चिह्नित किया गया है और लगभग सभी उत्तरदाताओं ने प्रश्नों के सकारात्मक छोर पर चिह्नित किया है जो एनजीओ के प्रति उनके सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है। इस प्रकार यह वही परिणाम है जो हमें प्रतिक्रियाओं के माध्य के मामले में मिला। सभी उत्तर पक्षपाती हैं और संभवतः और निश्चित रूप से उत्तर देने की ओर अधिक झुकाव रखते हैं। जनादेश स्पष्ट है कि लोग गैर सरकारी संगठनों (एनजीओ) के कामकाज से संतुष्ट हैं। स्वरूप मूल रूप से उन उत्तरों की उच्चतम आवृत्ति है जो उत्तरदाताओं द्वारा प्रश्नावली के माध्यम से दर्ज की गई हैं।

ISSN: 2456-043X
International Journal of Engineering Science and Generic Research (IJESAR)
Available Online at www.ijesar.in
Volume 11; Issue3; 2025; Page No. 1-13

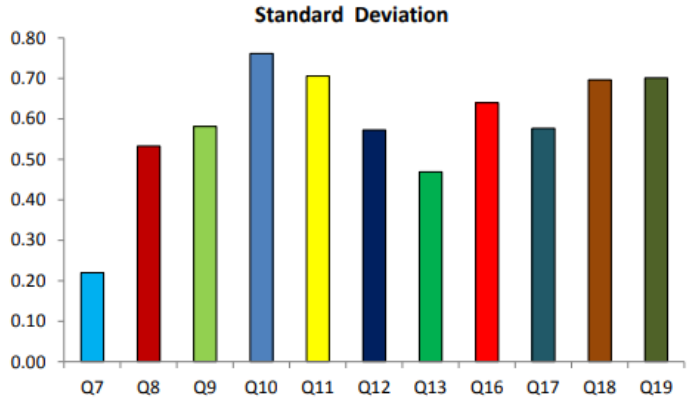

स्रोत: प्राथमिक डेटा

ग्राफ 3: सभी प्रश्नों के उत्तरों का मानक विचलन

प्रत्येक प्रश्न के उत्तरों का मानक विचलन ग्राफ 3 में प्रस्तुत किया गया है जो स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि चयनित विकल्पों में विचलन कम है जो 4 या 5 के बीच केंद्रित है। इसका मतलब है कि उत्तर लाइकर्ट पैमाने के सकारात्मक छोर के आसपास मंडराते हैं। इसका मतलब है कि उत्तरदाता अपने निर्णयों और उत्तरों में भ्रमित नहीं हैं। प्रत्येक प्रश्न को नकारात्मक छोर से सकारात्मक छोर तक 5 के रेटिंग स्केल पर चिह्नित किया गया है और लगभग सभी उत्तरदाताओं ने प्रश्नों के सकारात्मक छोर पर चिह्नित किया है जो एनजीओ के प्रति उनके सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है। इस प्रकार यह वही परिणाम है जो हमें प्रतिक्रियाओं के माध्य और बहुलक के मामले में मिला। सभी प्रतिक्रियाएँ पक्षपाती हैं और संभवतः और निश्चित रूप से उत्तर देने की ओर अधिक झुकी हुई हैं। जनादेश स्पष्ट है कि लोग गैर सरकारी संगठनों (एनजीओ) के कामकाज से संतुष्ट हैं। मानक विचलन मूल रूप से माध्य या माध्यिका से विचलन दिखा रहा है

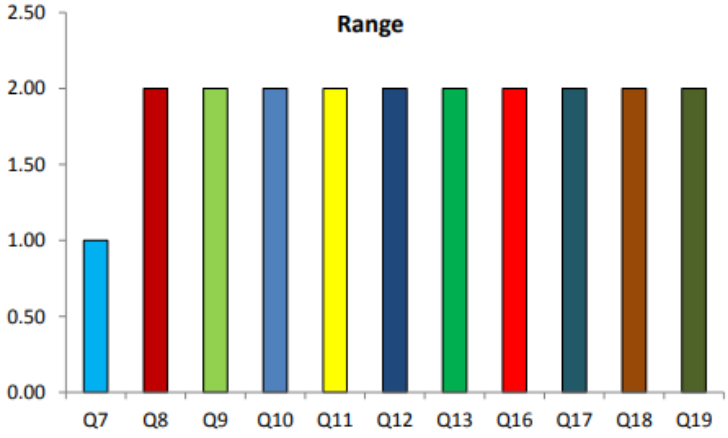

ISSN: 2456-043X
International Journal of Engineering Science and Generic Research (IJESAR)
Available Online at www.ijesar.in
Volume 11; Issue3; 2025; Page No. 1-13

स्रोत: प्राथमिक डेटा

ग्राफ 4: सभी प्रश्नों के उत्तरों की सीमा

प्रत्येक प्रश्न के उत्तरों की सीमा ग्राफ 4 में प्रस्तुत की गई है जो स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि निर्मित लाइकर्ट स्केल के विकल्प 3 से विकल्प 5 तक उत्तर अलग-अलग हैं। उत्तरदाताओं ने सीमित विकल्प चुने हैं जो 4 या 5 के बीच केंद्रित हैं। इसका मतलब है कि उत्तरदाता लाइकर्ट स्केल के सकारात्मक छोर के आसपास मंडरा रहे हैं। इसका मतलब है कि उत्तरदाता अपने निर्णयों और उत्तरों में भ्रमित नहीं हैं। प्रत्येक प्रश्न को नकारात्मक छोर से सकारात्मक छोर तक 5 के रेटिंग स्केल पर चिह्नित किया गया है और लगभग सभी उत्तरदाताओं ने प्रश्नों के सकारात्मक छोर को चिह्नित किया है जो एनजीओ के प्रति उनके सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है। इस प्रकार यह वही परिणाम है जो हमें उत्तरों के माध्य, बहुलक और मानक विचलन के मामले में मिला। सभी उत्तर पक्षपाती हैं और संभवतः और निश्चित रूप से उत्तर देने की ओर अधिक झुकाव रखते हैं। जनादेश स्पष्ट है कि लोग गैर सरकारी संगठनों (एनजीओ) के कामकाज से संतुष्ट हैं। सीमा मूल रूप से विभिन्न उत्तरदाताओं द्वारा चुने गए विकल्पों के बीच अधिकतम अंतर दिखा रही है जो 1 और 2 के बीच भिन्न हो रही है क्योंकि प्रतिक्रियाओं में 3 से 5 तक थोड़ा अंतर है।

क्रोनबैक का अल्फा विश्वसनीयता परीक्षण

क्रोनबैक के अल्फा का मान मिनिटैब 19 द्वारा गणना किया गया 0.7202 है। यह मान 0.7 के सामान्य बेंचमार्क से अधिक है जो बताता है कि आइटम एक ही विशेषता को माप रहे हैं। प्रत्येक निर्माण की आंतरिक संगति का मूल्यांकन करने और प्रश्नावली की सामग्री वैधता की जांच करने के लिए क्रोनबैक के अल्फा विश्वसनीयता सूचकांक का उपयोग किया गया है। शिक्षाविदों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के क्षेत्र के विभिन्न विशेषज्ञों से संपर्क किया गया और प्रश्नावली के घटकों को उनके निर्देशों के अनुसार संशोधित किया गया।

लाभार्थियों की आयु और प्राप्त सहायता के प्रकारों का क्रॉस-टेब्यूलेशन

लाभार्थियों की आयु और विभिन्न गैर सरकारी संगठनों से प्राप्त सहायता के प्रकारों के बीच क्रॉस टेबुलेशन किया गया था। उत्तरदाताओं की कुल संख्या 120 है जिन्हें लाभार्थियों की आयु और प्राप्त सहायता के प्रकारों के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। सहायता के प्रकार लाभार्थियों की आयु पर निर्भर करते हैं या नहीं, यह पहचानने के लिए ची-स्क्वायर परीक्षण लागू किया जाता है। इसके लिए शून्य परिकल्पना है

एनएच01गैर सरकारी संगठनों के माध्यम से प्राप्त सहायता के प्रकार लाभार्थियों की आयु से स्वतंत्र होते हैं।

तालिका 3: लाभार्थियों की आयु और प्राप्त सहायता के प्रकार के आधार पर उत्तरदाताओं की

ISSN: 2456-043X
International Journal of Engineering Science and Generic Research (IJESAR)
Available Online at www.ijesar.in
Volume 11; Issue3; 2025; Page No. 1-13

संख्या

प्राप्त सहायता के प्रकार	लाभार्थियों की आयु (वर्षों में)				
	10 -20 (वर्ष)	20 -30 (वर्ष)	30 -40 (वर्ष)	40 और उससे अधिक (वर्ष)	कुल
माइक्रो क्रेडिट	1	2	3	4	10
कौशल विकास	11	20	8	3	42
जनजातीय विकास निधि	2	3	8	5	18
स्वयं सहायता समूह	12	19	11	8	50
कुल	26	44	30	20	120

परीक्षा के परिणाम :यह विश्लेषण लाभार्थियों की आयु और उनके द्वारा प्राप्त सहायता के प्रकारों के बीच महत्वपूर्ण संबंध की जाँच करने के लिए किया गया था। इस प्रकार की परिकल्पना के लिए, इन दो चरों के बीच क्रॉस-टेब्यूलेशन किया गया था, और परिकल्पना की जाँच करने के लिए एक काई-स्कायर परीक्षण किया गया था। परिणाम की गणना SPSS से की गई थी। काई-स्कायर सांख्यिकी का मान 16.6922 है। p-मान 0.5376 है। परिणाम महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि $p > 0.05$ है। इस प्रकार, शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है। इसलिए, क्रॉस-टैब में दो चरों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर-निर्भरता नहीं है। इस प्रकार, लाभार्थियों की आयु और प्राप्त सहायता के प्रकार एक दूसरे से स्वतंत्र हैं।

लाभार्थियों की आयु और सर्वाधिक लाभान्वित कार्यक्रमों का क्रॉस-टेब्यूलेशन

लाभार्थियों की आयु और विभिन्न गैर सरकारी संगठनों से सहायता प्राप्त सर्वाधिक लाभान्वित कार्यक्रमों के बीच क्रॉस टैबुलेशन किया गया। उत्तरदाताओं की कुल संख्या 118 है जिन्हें लाभार्थियों की आयु और सर्वाधिक लाभान्वित योजनाओं के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। यह पहचानने के लिए कि सर्वाधिक लाभान्वित योजनाएँ लाभार्थियों की आयु पर निर्भर करती हैं या नहीं, काई-स्कायर परीक्षण लागू किया जाता है। इसके लिए शून्य परिकल्पना है

एनएच02गैर सरकारी संगठनों के माध्यम से संचालित योजनाएं लाभार्थियों की आयु से स्वतंत्र होती हैं।

ISSN: 2456-043X
International Journal of Engineering Science and Generic Research (IJESAR)
Available Online at www.ijesar.in
Volume 11; Issue3; 2025; Page No. 1-13

तालिका 4: लाभार्थियों की आयु और सर्वाधिक लाभान्वित कार्यक्रमों के आधार पर उत्तरदाताओं की संख्या

सर्वाधिक लाभान्वित कार्यक्रम	लाभार्थियों की आयु (वर्षों में)				
	10 -20 (वर्ष)	20 -30 (वर्ष)	30 -40 (वर्ष)	40 और उससे अधिक (वर्ष)	कुल
स्वयं सहायता समूह (एसएचजी)	12	16	१३	9	50
अम्बेडकर हस्तशिल्प विकास योजना (AHVY)	9	11	7	5	32
वाडी	1	7	7	3	18
गैर-लकड़ी वन उत्पाद (एनटीएफपी)	2	5	1	2	10
(डे-एनयूएलएम)	2	3	2	1	8
कुल	26	42	30	20	118

परीक्षा के परिणाम:यह विश्लेषण लाभार्थियों की आयु और उनके द्वारा प्राप्त सर्वाधिक लाभान्वित कार्यक्रमों के बीच महत्वपूर्ण संबंध की जाँच करने के लिए किया गया था। इस प्रकार की परिकल्पना के लिए, इन दो चरों के बीच क्रॉस-टेब्यूलेशन किया गया था, और परिकल्पना की जाँच करने के लिए एक काई-स्कायर परीक्षण किया गया था। परिणाम की गणना SPSS से की गई थी। काई-स्कायर सांख्यिकी का मान 6.3363 है। p-मान 0.8981 है। परिणाम महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि $p > 0.05$ है। इस प्रकार, शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है। इसलिए, क्रॉस-टैब में दो चरों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर-निर्भरता नहीं है। इस प्रकार, लाभार्थियों की आयु और सर्वाधिक लाभान्वित कार्यक्रम एक दूसरे से स्वतंत्र हैं।

निष्कर्ष

योजनाओं के माध्यम से महिलाओं के सामाजिक मूल्यों को बढ़ाने में सहायक हैं, जिसे समाज या परिवार में गरिमा और सम्मान और आर्थिक मूल्य बढ़ाने के माध्यम से मापा जाता है। एनजीओ महिला सशक्तीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। एनजीओ अपने क्षेत्रों में महिलाओं के लिए माइक्रो-

ISSN: 2456-043X
International Journal of Engineering Science and Generic Research (IJESAR)
Available Online at www.ijesar.in
Volume 11; Issue3; 2025; Page No. 1-13

क्रेडिट सुविधाओं को बढ़ाने में मदद कर रहे हैं। एनजीओ महिलाओं के लिए क्षमता निर्माण सुविधाओं को बढ़ाने में मदद कर रहे हैं।

संदर्भ

1. उतामी, वाहु और सुलेमान, अधी और विंडियासिह, रिली और सारी, लिलिक। (2024)। ग्रामीण क्षेत्रों में अर्थव्यवस्था को बेहतर बनाने में सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण समूहों की भागीदारी। टेक्नियम सस्टेनेबिलिटी। 7. 54-66। 10.47577/sustainability.v7i.11407।

2. यादव, हेमा और पालीवाल, मनीषा और चत्रधी, निशिता। (2022)। डिजिटल समावेशन के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं का उद्यमिता विकास: सार्वजनिक कार्यक्रमों के योगदान की जांच। 10.1007/978-3-031-12217-0_14।

3. उरीबो, ब्रिजेट और ओरहेरो, अब्राहम। (2023)। नाइजीरिया में ग्रामीण महिला सशक्तिकरण और विकास। जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, फाइनेंस एंड लॉ। 499-513। 10.47743/jopafl-2023-27-39।

4. देवी, मंजू और वर्मा, गीता और गभरू, आरती और चौहान, आंचल। (2023)। भारत में महिला सशक्तिकरण पर स्वयं सहायता समूह का प्रभाव। 10.5281/zenodo.7437801।

5. शर्मा, एलिजा और दास, सुभांकर। (2021)। ग्रामीण भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए एकीकृत मॉडल। जर्नल ऑफ इंटरनेशनल डेवलपमेंट। 33. 10.1002/jid.3539।.

6. भारत में शिक्षण मानकों को बेहतर बनाने के लिए केंद्र सरकार द्वारा उठाए गए कदम: मानव संसाधन विकास मंत्री, यहां से उपलब्धhttp://bweducation.businessworld.in/article/15-Initiatives-Taken-By-Central-Government-To-Improve-Teaching-Standards-In-India-HRD-Minister/26-06-2019-172435/.

7. साक्षर भारत मिशन, भारत, से उपलब्ध हैhttps://uil.unesco.org/case-study/प्रभावी-प्रैक्टिस-डेटाबेस-लिटबेस-0/साक्षर-भारत-मिशन-इंडिया.

8. लीब्रांट, आई. रीडिंग और राइटिंग कोर्स में लर्निंग प्लेटफॉर्म का उपयोग। रेविस्टा डिजिटल यूनिवर्सिटेरिया, 2008; 9(2): 3-12.

9. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार। शैक्षिक सांख्यिकी एक नज़र में; 2018, https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/statistics-new/ESAG-2018.pdf से उपलब्ध।

10. राज्य सभा-आधिकारिक रिपोर्ट,

ISSN: 2456-043X
International Journal of Engineering Science and Generic Research (IJESAR)
Available Online at www.ijesar.in
Volume 11; Issue3; 2025; Page No. 1-13

https://cms.rajyasabha.nic.in/UploadedFiles/Debates/OfficialDebatesDatewise/Floor/217/F27.07.2009.pdf पर उपलब्ध है।

11. श्याम बाबू, ए. बालिका ड्रॉपआउट पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, विशाखापत्तनम जिले में ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्र के स्कूलों का तुलनात्मक विश्लेषण। (अप्रकाशित डॉक्टरेट शोध प्रबंध), आंध्र विश्वविद्यालय; 2019।

12. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार। वार्षिक रिपोर्ट, 2003-04; 2004, https://wcd.nic.in/sites/default/files/AR2003-04.pdf से उपलब्ध।

13. भासा विजयकुमार, एल. गुजरात राज्य में महिला सशक्तिकरण के लिए विभिन्न सरकारी योजनाओं का आलोचनात्मक अध्ययन, प्रचलित कानूनों के संदर्भ में। (अप्रकाशित डॉक्टरेट शोध प्रबंध), सौराष्ट्र विश्वविद्यालय; 2019।

14. अंबेडकर, आर. घरेलू उपभोक्ता बाजार में जेपीजी का विपणन, आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले में एचपीसीएल के संदर्भ में एक अध्ययन। (अप्रकाशित डॉक्टरेट शोध प्रबंध), आंध्र विश्वविद्यालय; 2019।

15. महिला सशक्तिकरण के लिए सरकारी नीतियां और योजनाएं, https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/258391/14/09_chapter%203.pdf पर उपलब्ध।